Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श

श्रीमती अनीता अग्रवाल*

* पूनमचंद गुप्ता वोकेशनल महाविद्यालय, खंडवा(म.प्र.) भारत

शोध सारांश – स्त्री विमर्श समकालीन साहित्य की महान उपलब्धी है। यह महिलाओ को मिले लोकतान्त्रिक अधिकार शिक्षा और स्वावलम्बन का परिणाम है, इसका श्रेय सिर्फ उन्ही को जाता है। इस विमर्श में नारी जीवन के उन पक्षों को प्रस्तुत किया है जिनकी चर्चा से साहित्य और समाज विज्ञान में परहेज किया जाता था। स्त्री विमर्श सिर्फ भारत तक ही सीमित नही है अपितु पूरी दुनिया इसके दायरे में है जहाँ स्त्रियां अपनी पीड़ा और समस्या को ही नही व्यक्त कर रही बल्कि अपनी शक्ति की समीक्षा भी कर रही है। भारतीय चिंतन को नई धारा देने में स्त्री विमर्श ने अपनी विशिष्ट भूमिका निभाई है।काल और परिस्थितयों द्वारा उत्पन्न चुनौतियों को समकालीन स्त्री शक्ति के अवसरों में बदल दिया है। वर्तमान सन्दर्भ में आधुनिक स्त्री ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी सफलता के दम पर अपनी पहचान बनाई है। स्त्री की बदलती सोच परिवार, समाज, धर्म, राजनीति, राष्ट्र और संस्कृति पर नये सिरे से सोचने को प्रेरित किया है। अंग्रेजी साहित्य में भी भारतीय लेखकों द्वारा स्त्री विमर्श पर विचार किया गया है। स्त्री विमर्श एक ऐसा विमर्श है जो जाति, धर्म, वर्ग, वंश, प्रीत और देश आदि से अलग हटकर है, जहां स्त्री अपने उऊपर हो रहे अत्याचार, शोषण, उत्पीडन,उपेक्षा आदि का विरोध करती है। स्त्री विमर्श को पश्चिम से आई एक अवधारणा के रूप में देखा और विचार किया जाता है। स्त्री के स्वभाव, मन और उसकी सम्वेदनाओ को समझने के लिए स्त्री विमर्श एक महत्वपूर्ण दृष्टि है। बदलते हुए समाज में स्त्री के पारंपरिक मंडन को तोड़ने की पहल स्त्री विमर्श है ताकि स्त्री को समानता का अधिकार सम्मान अस्तित्व और स्वतंत्रता प्राप्त हो सके।

प्रस्तावना – स्त्री विमर्श एक वैश्विक विचारधारा है जिसने पूरे विश्व की स्त्रियों का संघर्ष अपने पितृसत्तात्मक समाज के विरोध में देखने को मिलता है। स्त्री विमर्श एक प्रकार का साहित्यिक आंदोलन है जिसके केंद्र में समानता का अधिकार, स्त्री अस्मिता और मुक्ति का सवाल है। यह सब स्त्री को तभी प्राप्त हो सकता है जब पुरुषों की मानसिकता को बदला जाए। स्त्री विमर्श चेतना और जागृति का विषय है। स्त्री की विविध समस्याएं उनके अपने सवाल हैं और उनका अपना अधिकार है। यह सब स्त्री विमर्श के अंतर्गत शामिल है। समय के साथ परिस्थितयों में आए बदलाव के कारण स्त्री की सोच, स्वभाव, स्थिति में बदलाव आना ही स्त्री विमर्श है। स्त्री विमर्श का एक मात्र उद्देश स्त्री को उसकी गुलामी से अवगत करना है तथा उसे उसके अधिकारों और कर्तव्य तथा समाज में परिवार में उसकी क्या स्थिति है इससे अवगत कराना है। स्त्री विमर्श को अंग्रेजी में फेमिनिज्म बोला जाता है। शुरूआत में हिंदी में इसके लिए नारीवाद शब्द प्रचार में रहा। नारीवाद लैंगिक समानता के लिए प्रयास करता है और महिलाओं के जीवन को प्रभावित करने वाली समस्याओं को सुधारने में मदद करता है। पश्चिमी विचारको ने नारी मुक्ति के लिए जो विचार प्रस्तुत किए हैं उन्ही से स्त्री विमर्श का उदय हुआ। यह माना जाने लगा कि स्त्री ने अपना पिंजरा तोड़ डाला, स्त्री की वेशभूषा तथा देह मुक्ति के सवाल तेजी से उठे और धीरे से स्त्री मुक्ति का रूपांतरण देह मुक्ति में हो गया। यह समझा जाने लगा कि यही स्त्री सशक्तिकरण है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में स्त्री विमर्श –स्त्री चिंतन उतना ही प्राचीन है जितना हमारा साहित्य। फ्रेडरिक एंजल्स की पुस्तक 'परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' के अनुसार व्यक्ति संपत्ति के विकास के साथ स्त्री के शोषण का आरंभ होता है। जिस प्रकार का रिश्ता मजदूरों का पूंजीपतियों से है कुछ उसी प्रकार का रिश्ता स्त्रियों का पुरूषों से है। इस संबंध के क्रूर विरोधाभास आज भी महसूस किये जा रहें है।

जॉन स्टुअर्ट मिल की रचना के अनुसार स्त्री और पुरुष के बीच शरीरिक विषमता जरूर है पर बौद्धिक क्षमता में दोनों बराबर है। वैसे भी विषमता को असमानता मनाना अमानविय है। सिमोन द वोउवार, 'द सेकंड सेक्स' में अकारण नहीं लिखती है कि 'स्त्री पैदा नहीं होती, स्त्री बना दी जाती है'।स्त्री विमर्श समकालीन साहित्य की महान उपलब्धि है यह महिलाओं को मिले लोकतांत्रिक अधिकार, शिक्षा और स्वावलंबन का परिनाम है। इसका श्रेय केवल उन्ही को जाता है। इस विमर्श ने नारी जीवन के उन पक्षों को प्रस्तुत किया है जिनकी चर्चा से साहित्य और समाज विज्ञान में परहेज किया जाता था। स्त्री विमर्श सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं है अपितु पूरी दुनिया इसके दायरे में है। यहां स्त्रिया अपनी पीड़ा और समस्या को ही नहीं व्यक्त कर रही है बल्किअपनी शक्ति की समीक्षा भी कर रही है। स्त्रीवादी विमर्श से संबंधी आदर्शों का मूल्य यही रहता है कि कानूनी अधिकारों का आधार लिंग ना बने। आधुनिक स्त्रीवादी विमर्श की मुख्य आलोचना हमेशा से यही रही है कि इसके सिद्धांत एवं दर्शन मुख्य रूप से पश्चिमी मुल्यो एवं दर्शन पर आधारित रहे हैं। नारीवाद राजनीतिक आंदोलन का एक सामाजिक सिद्धांत है जो स्त्रियों के अनुभवों से जनित है। हालांकि मूल रूप से यह सामाजिक संबंधों से अनुप्रेरित है लेकिन कहीं स्त्रीवादी विचारक का मुख्य जोर लैंगिक समानता और महिलाओं के अधिकार इत्यादी पर ज्यादा बल देते हैं।

स्त्री विमर्श का आरम्भ– नारी विमर्श का प्रारम्भ कब हुआ इसके सम्बन्ध में विदवानों में सुनिशचित एक मतता नहीं है। कुछ लोगों के अनुसार इसका

प्रारम्भ 19वीं शताब्दी में हुआ जब पश्चिम में स्त्रियों के माताधिकार और पाश्चात्य संस्कृति में स्त्रियोंके योगदान पर चर्चा होने लगी थी। लेकिन वास्तविकता यह है कि यह विमर्श 20वीं शताब्दी की शुरुआत है।20वीं शताब्दी में भी कुछ लोग इसका आरंभ फ्रांसिसी लेखक सिमोन द बुआ (1949) के प्रकाशन वर्ष से शुरू हुआ और कुछ मैरी एल्मन की पुस्तक 'थिंकिंग अबाउट वीमेन' 1968 के प्रकाशन वर्ष से। लेकिन अधिकाँश विद्धान इस तरह के किसी वर्ष विशेष को स्त्री विमर्श का प्रस्थान बिंदु मनाना उचित नहीं समझते, क्योंकि 20वीं शताब्दी में ही इस पहले भी स्त्री की अलग पहचान उसके स्वतंत्र अस्तित्व और उसके अधिकारों की श्रृंखलाओं को उठाया जाने लगा था। वर्जीनिया वुल्फ ने अपनी पुस्तक 'ऐ रूम आफ वन्स ओन' 1929 में यूरोप और अमेरिका के स्त्री विमर्श को ही नहीं,भारतीय स्त्री विमर्श को भी प्रभावित किया है। हिंदी की घोषित नारीवादी लेखिका प्रभा खेतान भी इस पुस्तक से प्रभावित हुई है। यूरोप और अमेरिका में नारी वाद में 20वीं शताब्दी के आखिरी दशक में खूब जोर पकड़ा।

अंग्रेजी साहित्य में स्त्री विमर्श – अंग्रेजी में लिखने वाले भारतीय लेखकों को कई पीढ़ियों के प्रयासों के पश्चात अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता मिली है, खासकर सलमान रुश्दी द्वारा मिडनाइट्स चिल्ड्रन 1981 के प्रकाशन के बाद से, और अंग्रेजी में भारतीय उपन्यास को आखिरकार एक महत्वपूर्ण साहित्यिक प्रयास के रूप में स्वीकार किया गया है। धीरे–धीरे भारतीय महिला लेखकों ने अंग्रेजी साहित्य में लेखन करना शुरू कर दिया। जिसका मुख्य श्रेय 1997 में द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स के लिए बुकर पुरस्कार जीतने वाले अरुंधति रॉय को जाता है। परंपरागत रूप से, पुरुषप्रधान होने के कारणस्त्रियों को कम महत्व दिया गया।अंग्रेजी में भारतीय महिला लेखक भी पुरुषो की तुलना में आगे बढ़ रही थी। पितृसत्तात्मक धारणाओं के कारण भारतीय महिला लेखकों के काम को कम आंका गया है।

इसके अतिरिक्त, अंग्रेजी में भारतीय महिला लेखक भी पुरुषो की तुलना में आगे बढ़ रही थी। चूँकि अंग्रेजी में लेखन केवल बौद्धिक, समृद्ध, शिक्षित वर्ग के लेखकों के लिए उपलब्ध है, इसलिए ऐसा माना जाता था कि लेखक और उनके लेखन कार्य सामाजिक स्तर से संबंधित हैं, और भारतीय जीवन की वास्तविकता से कटे हुए हैं ।अधिकार उपन्यास दुखी ग्रहणी की मन की व्यथा के बारे में बताते हैं। महिलाओं के उत्पीडन के चित्रों को सही माना जाता है। गीतों और दंतकथाओं के माध्यम से कहानी कहने की मौखिक परम्परा की शुरुआत करने वाली महिलाएँ ही थीं जब धीर–धीरे समाज में साक्षरता फैलने लगी तों इन कहानियों को नाटक व उपन्यास में रूपांतरित किया गया। अंग्रेजी में लिखे गए भारतीय साहित्य की मात्रा विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में लिखे गए साहित्य से कम है, और यह समय की एक छोटी सी सीमा को कवर करता है, जिसकी शुरुआत अंग्रेजी भाषा और शिक्षा के प्रसार के साथ ही हुई। लेकिन पिछले दो दशकों में अंग्रेजी में भारतीय महिलाओं के लेखन में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है, इस अवधि का साहित्य भारत और अन्य जगहों पर प्रकाशित हुआ है।

भारतीय महिलाओं ने पारंपरिक रूप से सौंपी गई भूमिकाओं के आगे समर्पण करके और खुद को हावी होने देकर पितृसत्तात्मक मूल्य प्रणाली की सर्वोच्चता को सचेत रूप से स्वीकार कर लिया है। लेकिन बढ़ती शिक्षा, बेहतर नौकरी के अवसर और अधिकारों और विशेषाधिकारों के बारे में जागरूकता ने लगातार बदलाव की शुरुआत की है लेखिकाएँ ज्यादातर पश्चिमी शिक्षा प्राप्त हैं। मध्यवर्गीय लेखिका महिलाएँ जो अपने लेखन में बाल–विवाह, दहेज, महिलाओं की शिक्षा पर प्रतिबंध, तयशुदा विवाह, सती प्रथा और जबरन विधवा विवाह जैसी दमनकारी संस्थाओं में फँसी उच्च जाति और वर्ग की पारंपरिक हिंदू महिलाओं की दुर्दशा के प्रति अपना असंतोष व्यक्त करती हैं। उत्तर–औपनिवेशिक भारत में महिला लेखकों ने महिलाओं को बदलते सामाजिक परिदृश्य के संदर्भ में रखते हुए, विशेष रूप से ऐसी महिलाओं की मानसिकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए, अपना खुद का साहित्य रचा है।

अंग्रेजी में भारतीय कथा साहित्य में विषय वस्तु के रूप में महिलाएं कोई नई बात नहीं है, लेकिन उपन्यासकारों का दृष्टिकोण निश्चित रूप से अलग है। 1960के दशक के उपन्यास में भारतीय कथा साहित्य में महिलाओं को विभिन्न गुणों वाली आदर्श स्त्री के रूप में चित्रित किया गया था, जिसमें विद्रोह का कोई स्थान नहीं थी, जबकि बाद के उपन्यासों में महिलाओं को शिक्षित और अपने अधिकारों और विशेषाधिकारों के प्रति जागरूक दिखाया गया है जो समाज में अपने उचित स्थान की मांग कर रही हैं कमला मार्कंडेय, अनीता देसाई, शशि देशपांडे, शोभा डे, भारती मुखर्जी और कुछ अन्य लेखकों ने शुरू में अपने लेखन में किसी भी तरह के नारीवादी पूर्वाग्रह से इनकार किया है, लेकिन गहराई से विश्लेषण करने पर एक मजबूत नारीवादी इरादे का पता चलता है।क्योंकि महिलाओं के मुद्दे उनके कथानक का मुख्य विषय हैं अरुंधति रॉय ने 'द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स' में अलगाव, उत्पीड़न, अवसाद, हताशा और समामेलन के केंद्र से पूरे सांस्कृतिक परिदृश्य की कल्पना की है। गीता हरिहरन, नमिता गोखले, अनीता नायर और मंजू कपूर नामक भारतीय महिला उपन्यासकारों की नई पीढ़ी ने बहुत आलोचनात्मक ध्यान आकर्षित किया है। महिलाओं के बीच बढ़ती साक्षरता के बावजूद और उन्हें अधिक संवैधानिक अधिकार दिए जाने के बावजूद और न केवल सामान्य कल्याण के लिए बहुत बड़ा योगदान देने के बावजूद, बल्कि पारंपरिक रूप से सौंपी गई घरेलू जिम्मेदारियों की उपेक्षा किए बिना परिवार और समाज में एक प्रमुख सहायक भूमिका निभाने के बावजूद, लिंग–केंद्रित समाज समुदाय में उनके रचनात्मक और सकारात्मक योगदान की सराहना करने में विफल रहता है। साहित्य के द्वारा हम किसी भी मुद्दे को उजागर तथा स्थिति को दोहरा सकते है।स्वतंत्रता के बाद से भारत में महिलाओ का रचनात्मक लेखन कार्य निरंतर बढ़ रहा है फिर भी पुरुष प्रधान भारतीय सहित्य ने जान बुझकर उनकी भूमिका को नजरंदाज कर दिया है। हाल के वर्षों में सिमोन डी ब्यूवोइर सेकेंड सेक्स, 1952 बेट्टी फ्रीडन फेमिनिन मिस्टिक, 1963और केट मिलेट सेक्सुअल पॉलिटिक्स, 1970जैसे लेखकों द्वारा प्रस्तुत पश्चिमी नारीवादी सिद्धांतों का प्रभाव देखा गया है। इन प्रभावों के तहत भारतीय महिला लेखकों ने अतीत के साहित्यिक और सामाजिक मानदंड को तोड़ने का सफलतापूर्वक प्रयास किया है। वे अपने पात्रों की मानसिकता में गहराई से उतरते हैं और नैतिकता की एक नई अवधारणा की शुरुआत भी करते हैं।

कविता में भारतीय महिलाएँ–स्वतंत्रता के बाद भारतीय अंग्रेजी कविता ने कई जबरदस्त विकास देखे हैं। महिला काव्य स्वरों का उदय उनमें से सबसे महत्वपूर्ण है। महिला कविता, वास्तव में, एक पत्नी और माँ के रूप में महिला की पारंपरिक भूमिका के खिलाफ एक विद्रोह है।भारतीय महिला कवियों द्वारा पश्चिमी नारीवादी सिद्धान्तो को अंग्रेजी की भारतीय कविताओ में अपनाया।महिला कवियों ने प्रतिरोध और आत्मविश्वास दोनों को व्यक्त करना शुरू कर दिया। तोरु दत्ता (1856–77) अंग्रेजी में लिखने वाली

पहली भारतीय महिला कवि थीं और उनकी रचना में भारतीय नारीत्व के आदर्श उदाहरण, जैसे सीता और सावित्री, महिलाओं को पीड़ित, आत्म-बलिदान की भूमिकाओं में दिखाती हैं।

स्वतंत्रता के बाद बड़ी संख्या में भारतीय महिला कवि परिदृश्य में उभरी हैं और आज भी लिखना जारी रखती हैं। वे प्रेम में हताशा, निराशा और अकेलेपन की भावना को व्यक्त करने में पुरुषों की तुलना में अधिक तीव्र, प्रामाणिक और जरूरी हैं। ऐसी महिला कवियों में कमला दास, लीला रे, मोनिका वर्मा, गौरी देशपांडे, यूनिस डीसूजा, ममता कालिया, सुनीति नामजोशी, मीना अलेक्जेंडर, रोशन अल्काजी हमारा ध्यान आकर्षित करने लायक हैं। कमला दास ने एक जोरदार और मार्मिक स्त्री स्वीकारोक्ति कविता की शुरुआत की। अंग्रेजी में लिखने वाली सभी भारतीय महिला कवियों में कमला दास (1934-2009) का स्थान सबसे ऊपर है। वे स्त्री-पुरुष संबंधों के विषय पर आधारित एक सशक्त और मार्मिक स्त्री-कविता के लिए जानी जाती हैं।महिला लेखिकाएँ सहनशील, आत्म-बलिदान करने वाली महिलाओं के पारंपरिक चित्रण से हटकर पहचान की तलाश करने वाली संघर्षशील महिला पात्रों की ओर बढ़ी हैं, जिन्हें अब केवल उनकी पीड़ित स्थिति के संदर्भ में चित्रित और परिभाषित नहीं किया जाता है। बल्कि उनकी वीर गाथाओं से साहित्य को सजाया जाता है।पहले के उपन्यासों के विपरीत, 1980 के दशक के बाद की महिला पात्र खुद को मुखर करती हैं और विवाह और मातृत्व को चुनौती देती हैं। हाल के लेखकों ने महिलाओं के जीवन को एक आदर्श तक सीमित करने के बजाय, महिलाओं की विविधता और प्रत्येक महिला के भीतर की विविधता दोनों को दर्शाया है।

अमृता प्रीतम के अनुसार-जब कोई पुरुष महिलाओं की शक्ति को नकारता है तो वह अपने ही अवचेतन को नकार रहा होता है ऐसी कई कहानियाँ हैं जो कागजों में नहीं हैं, बल्कि औरतों के शरीर और उनके अंदर लिखी हुई हैं।यह पंक्ति अमृता प्रीतम के लेखों में देखने को मिलती है, पश्चिमी विचारों ने नारी मुक्ति के लिए जो विचार प्रस्तुत किये उन्हीं से स्त्री विमर्श का उदय हुआ।स्त्री की वेशभूषा तथा देहमुक्ति के सवाल तेजी से उठे और धीरे से स्त्री मुक्ति का रूपांतरणदेह मुक्ति में हो गया। यह समझा जाने लगा कि यही स्त्री सशक्तिकरण है अपने शुरूआती विकास में स्त्री लेखन एक निश्चित सन्देश और सन्दर्भ में रूढ़ हो गयासिमोन द बौबा ने कहा था- औरत पैदा नहीं होती बनाई जाती है ।कृपा बाई सत्यानंद अंग्रेजी में उपन्यास लिखने वाली पहली भारतीय महिला थी। उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से हिंदू स्त्री के जीवन की दुर्दशा बयान की थी ।कृपा बाई ने जनाना मिशन स्कूल मेंजाकर महिलाओं को पढाया और मुस्लिम लड़कियों के लिये एक स्कूल भी खोला। कृपा बाई स्त्री के प्रति जागरूक थी और लगातार स्थानीय अखबारों और पत्रिकाओं में लिखती थी। पुरुष प्रधान देश होने के कारण भारतीय पुरुष एक बुद्धिमान स्त्री बर्दाश्त नहीं कर सकता क्योंकि वह स्त्री को अपने से ऊपर देख नहीं सकता था । समय के साथ साथ महिलाओं की स्थिति बदल रही है साथ ही महिला चिंतन और लेखन धारा भी बदल रही है। स्त्री चिंतन इतना ही प्राचीन है जितना हमारा साहित्य है। जॉन स्टुअर्ट मिल की रचना डी सब्जेक्शण ऑफ वूमेन के अनुसार 'स्त्री और पुरुष बौद्धिक क्षमता में दोनों बराबर हैं'। सेकेंड सेक्स के अनुसार 'स्त्री पैदा नही होती स्त्री बना दी जाती है'। हिंदी प्रसिद्ध लेखिका प्रभा खेतान का साहित्य स्त्री जीवन के संघर्ष, मनोकामना, उसकी इच्छा ,पीड़ा एवं मानसिकता का जीवंत उदाहरन है। पुरुष प्रधान संस्कृति रुढ़ी परंपरा का संघर्ष करने वाले नारी का वर्णन उनके लेखों में मिलता है प्रभा खेतान में अपनी रचनाओं में नारीयों को भावनाओं में बहता हुआ ना बता कर और उसके समग्र खड़े होने की मांग है ताकि उनका मानसिक सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक विकास हो विकास हो सके।

निष्कर्ष- लेख महिलाओं के अधिकारों का समाज में उनकी स्थिति पर आधारित है भारतीय महिला लेखको द्धार समाज को महिलाओं के अधिकारों के प्रति जागरूक किया गया है समाज में स्त्री और पुरुष दो गाड़ी के पहिये हैं जब दोनों ठीक बाराबारी में चलेंगे तभी समाज भी परिवार की तरक्की होगी यह विमर्श स्त्री को पुरानी सोच से निकल कर आगे मार्ग प्रशस्त करने का कार्य कर रहा है स्त्री विमर्श के प्रश्नों ने समाज को एक नई सोच प्रदान की है जिसके समाज में एक नई ऊर्जा उत्पन्न हो रही है जो समानता पर आधारित है और स्त्री विमर्श के मध्यम से स्त्री के मन को आत्मविश्वास धर्म मनोबल प्रदान किया गया है। निष्कर्ष रूप में यहीं कहा जाएगा कि अब भारतीय नारीअबला नहीं रही सबला हो चुकी है क्योंकि यह वह शक्ति है जिसके आगे देवता भी नतमस्तक हुए हैं तो पुरुष क्या चीज है, नारी के बिना परिवार, समाज, राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती है। नारी कोमल है, कमजोर नहीं शक्ति का नाम ही नारी है ।कमजोर और कोमल समझकर जिसको सबने देखा है, वह कमजोर नहीं शक्तिशाली है और सभी गुणों की अवतार है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. अभिषेक कुमार गौड़ हिंदी विभाग सागर।
2. आदमी की निगाह में औरत,राजेंद्र यादवराजकमल प्रकाशन 2021 पृष्ठ 15
3. मेरी प्रिय कहानिया,अमृता प्रीतम राजपाल प्रकाशन 2014 पृष्ठ15
4. मोनोग्राफी,रघुवीर सहाय प्रथम संस्करण 2014 पृष्ठ63
5. आधी जमीन,सरोज चौबे अक्तूबर 2001 पृष्ठ79
6. जनसत्ता,चन्द्रभान सिंह यादव जनवरी 11, 2021
7. संध्या तिवारी, अंग्रेजी में उत्तर आधुनिक भारतीय महिला लेखिकाए: आलोचनात्मक चिंताए और रुझान, रिसर्च इंडिया प्रेस ।

****